INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.71 (SJIF 2021)

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति के लिए शिक्षा के योगदान : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

(The Contribution of Education to the Status of Women in Indian Society: A Sociological Analysis)

KULJINDER SINGH
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF SOCIOLOGY
A.S. COLLEGE KHANNA, LUDHIANA (PUNJAB)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/09.2021-54633337/IRJHIS2109024

प्रस्तावना :

भारतीय समाज में परिवर्तन का महिलाओं पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। इसने समाज में महिलाओं के पारंपरिक पदों और भूमिकाओं को भी प्रभावित किया है। आज, भारतीय समाज में महिलाओं के बदलते पैटर्न का अध्ययन समाजशास्त्र के विषय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। भारतीय महिलाओं की स्थिति का इतिहास हमेशा अस्थिर रहा है। महिलाओं ने निश्चित समय में भारतीय संस्कृति और सभ्यता में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई हैं और कई ऐसे युग भी रहे हैं जिनमें उन्हें आर्थिक शोषण और विभिन्न प्रकार के शोषण का सामना करना पड़ा है। पुरुषों द्वारा महिलाओं का लगभग पूरी तरह से शोषण किया जाता है। एक पुरुष–प्रधान भारतीय समाज में, पुरुष महिलाओं को वह स्थान नहीं देना चाहते थे जिसके वे हकदार थे। पारंपरिक भारतीय समाज में, महिलाओं की स्थिति में गिरावट के लिए कई रीति–रिवाज जिम्मेदार थे। समाज की परंपराएं क्या हैं जैसी आधुनिक हैं और समय की परिस्थितियां और परिस्थितियां व्यक्ति की स्थिति और भूमिका को प्रभावित करती हैं। इस प्रकार समाज का आकार और उसकी संरचना महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर भी निर्भर करती है। समाज में शहरीकरण, जनसांख्यिकी, औद्योगिकीकरण, परिवहन और संचार जैसे विकास पुरुषों और महिलाओं की सामाजिक स्थितियों के सामाजिक–मूल्यों और प्रतिमानों को जटिल बना रहे हैं।

अध्ययन का उद्देश्य :

1. भारतीयसमाजमेंमहिलाओंकीसामाजिकस्थितिकेबारेमेंजाननेकेलिए।
2. शिक्षाकेप्रसारकेसाथमहिलाओं की सामाजिक स्थिति में बदलाव को जानना।

अनुसंधान विधि :

यह वर्तमान अध्ययन माध्यमिक डेटा पर निर्भर करता है। पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और वेबसाइटों से लिया गया। यह अध्ययन सामग्री विश्लेषण पर आधारित है।

भारतीय समाजशास्त्री एम.एन. श्रीनिवास के अनुसार, "भारतीय समाज क्रांतिकारी परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रहा है। पश्चिमी शिक्षा, कानूनी व्यवस्था, राजनीतिक विचारधारा, सामाजिक मूल्य लगातार बदल रहे हैं। भारत के स्वतंत्र होने के बाद से पश्चिमीकरण की प्रक्रिया तेज हो गई है। और भी बहुत कुछ बदल रहा है।" प्रमिला कपूर के अनुसार, "उसी समय, भारत में परिवर्तन की नई प्रक्रिया को नए प्रायोजकों और नई खोजों द्वारा आगे बढ़ाया गया है। भारत में बढ़ते औद्योगीकरण ने लोगों की जीवन शैली को बदल दिया है।" आज शिक्षा को समाज का मूल संस्थान माना जाता है, जिसका समाज पर बहुत प्रभाव पड़ रहा है। यही कारण है कि आज समाजशास्त्र का ध्यान शिक्षा के क्षेत्र की ओर जा रहा है। इसके साथ समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र की एक नई शाखा अस्तित्व में आई है।

स्वतंत्रता के बाद से ही भारत में एक लोकतांत्रिक समाज की नींव रखी गई थी और योजनाबद्ध विकास के माध्यम से पारंपरिक सामाजिक संरचना को बदला जा रहा है। इस तरह कई आधुनिक शक्तियां और कारक भारत में भी कई बदलाव ला रहे हैं। आजादी के बाद से संबंधित कीमतों में बदलाव की गति भी तेज हुई है। उसी समय, संविधान के अधिनियमन के साथ, संविधान में पिछले कई वर्षों से विकलांगता और शोषण के विभिन्न रूपों से पीड़ित समाज के निचले और शोषित वर्गों के लिए विभिन्न कानून बनाए गए थे। लोगों की आर्थिक और मानसिक स्थिति। आजादी के बाद, भारत सरकार ने ग्रामीण समुदायों में शिक्षा के प्रसार पर ध्यान देने के साथ हर गाँव में स्कूल खोलने का लक्ष्य रखा और लगभग हर गाँव में कम से कम एक प्राथमिक स्कूल शुरू किया और मुफ्त शिक्षा की अवधारणा पेश की। साथ ही क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा प्रदान की गई ताकि बच्चे शिक्षा को बेहतर ढंग से समझ सकें और आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को मुफ्त शिक्षा प्रदान की जा सके।

भारत की स्वतंत्रता के बाद, सभी को संविधान में समान दर्जा दिया गया, जिसने महिलाओं को पुरुषों के साथ समान अधिकार दिया। इसी समय, समानता को संविधान में एक मौलिक अधिकार घोषित किया गया था। जिसके साथ यह कानूनी रूप से घोषित किया गया था कि सभी को समान माना जाना चाहिए। उसी समय, जब पंचवर्षीय योजना स्थापित की गई थी, पहली पंचवर्षीय योजना का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को समान दर्जा देना था और पहली चार पंचवर्षीय योजनाओं में आगे बढ़ना महिलाओं की शिक्षा और कल्याण के लिए कई संगठनों का मुख्य लक्ष्य है और छठी पंचवर्षीय योजना इस बात की गवाह है जिसने महिलाओं के बहुआयामी विकास को सक्षम बनाया है।

भारतीय स्वतंत्रता के बाद एक और बड़ी समस्या ग्रामीण अशिक्षा थी। क्योंकि उस समय भारत की अधिकांश आबादी गाँवों में रहती थी, जिसके लिए उन्हें शिक्षित करना बहुत जरूरी था। इस कारण से, शिक्षा मुख्य लक्ष्य था। पारंपरिक भारतीय समाज में, चाहे हिंदू या मुस्लिम उस समय शासन करते थे, शिक्षा की उपेक्षा की गई

थी, जिसका अर्थ है कि प्राचीन भारतीय समाज में शिक्षा जाति पर आधारित थी और मदरसों या पथशालाओं में पढ़ाई जाती थी। ये स्कूल और मदरसे दान पर चलते थे और हर गाँव में नहीं थे। शिक्षा उच्च जातियों तक ही सीमित थी। महिलाओं को शिक्षा से लगभग बाहर रखा गया था। इसी समय, शिक्षा का आधार धार्मिक था। कोई तकनीकी या व्यावसायिक मुखिया नहीं था क्योंकि यह वह समय था जब किसी व्यक्ति का व्यवसाय जाति पर आधारित था और कोई व्यक्ति अपने परिवार के सदस्यों या अपनी जाति या परिवार के सदस्यों से घर पर ही व्यावसायिक प्रशिक्षण ले सकता था। उसी समय, पारंपरिक शिक्षा धार्मिक साहित्य के अध्ययन तक सीमित थी, ब्राह्मणों को शिक्षा का अधिकार था, और अन्य जातियों के लोग मैनुअल श्रम तक ही सीमित थे, जो उन्हें घर से शूद्रों और महिलाओं को मिलता था। शिक्षा का अधिकार। भारतीय गांवों की एक और बड़ी समस्या यह थी कि उनके लोग गरीब और अनपढ़ थे, जिसके कारण उनका कृषि उत्पादन भी सीमित था। यही कारण है कि भारत सरकार को आजादी के बाद से बहुत सारी समस्याएं हैं क्योंकि यह सब गांवों के विकास के लिए ही हो सकता था, अगर वहां के लोग शिक्षित होते, उनकी समस्याओं को समझते और उनका समाधान कर सकते थे।

इसी तरह, अंग्रेजी राज्य में, शिक्षा की उपेक्षा की गई, खासकर ग्रामीण इलाकों में। कुछ शैक्षणिक संस्थान खोले गए लेकिन वे शहरी क्षेत्रों में भी थे और इन शिक्षण संस्थानों का मुख्य उद्देश्य केवल अपने लिए क्लर्क का उत्पादन करना था। लेकिन इस समय भारतीय समाज में शिक्षा बिना किसी भेदभाव के समानता के आधार पर फैलनी शुरू हुई। उसी समय, शिक्षा उच्च वर्गों या शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित थी, जिससे भारत का अधिकांश हिस्सा निरक्षर था। उस समय भारतीय समाज के लिए यह एक महान कदम था कि शिक्षा का प्रसार बिना किसी भेदभाव के समानता के आधार पर शुरू हुआ। इसने निचली जातियों और महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त किया क्योंकि ऐसे वर्ग थे जो शिक्षा से वंचित थे। पिछले कई दशकों से जिसकी वजह से उन्हें कई विकलांगों का सामना करना पड़ रहा था।

भारतीय समाजशास्त्रियों ने महिलाओं की स्थिति पर अलग-अलग विचार दिए हैं: -

1. अपनी किताब वूमेन इन मॉडर्न इंडिया में, नीरा देसाई ने महिलाओं के बदलते पैटर्न का अध्ययन किया है और बताया है कि ब्रिटिश शासन के बाद से भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति कैसे बदल गई है।

2. एस.सी. महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर अपने विचार व्यक्त करते हुए, दुबे लिखते हैं, "महिलाओं के बीच पारंपरिक विचार और धारणाएं बदल रही हैं और वे अब महसूस कर रहे हैं कि उनकी सामाजिक स्थिति को बदलने की जरूरत है। शिक्षा के अवसर, औद्योगिक गतिशीलता में वृद्धि, सामाजिक व्यवस्था महिलाओं की सामाजिक स्थिति को बदल रही है। ”

3. एस सी दुबे लिखते हैं कि महिलाओं की बेहतरी के लिए उनकी स्थिति में बदलाव लाना आवश्यक है। जिसके लिए सामाजिक संरचना में भी बदलाव लाना आवश्यक है। पुरुषों को अपनी विचारधारा बदलनी होगी। भारत में, बहुविवाह, घूंघट की प्रथा, सती प्रथा, आदि, भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए शुरू में

बाधाएं हैं। लेकिन आधुनिक समय में एक ऐसा कारक है जो महिलाओं की सामाजिक स्थिति को बदल रहा है। उनमें शिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक है।

4. प्रमिला कपूर ने भारतीय महिलाओं के व्यावहारिक और घरेलू जीवन और उनकी शैक्षिक गतिविधियों का अध्ययन किया है। ये अध्ययन परिवार और विवाह के बदलते पैटर्न पर प्रकाश डालते हैं और बताते हैं कि कैसे शिक्षा और परिवार और समाज में महिलाओं की भूमिका बदल रही है।

5. एस.सी. भारतीय महिलाओं की बदलती सामाजिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए, दूबे लिखते हैं कि आज भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति और भूमिका के बारे में पारंपरिक दृष्टिकोण बदल रहा है। इस बदलाव का मुख्य कारण यह था कि महिलाओं को शिक्षित होना चाहिए।

6. मैक्स वेबर ने सामाजिक प्रणाली को अपनी सामाजिक स्थिति के एक समूह के रूप में समझाते हुए कहा है कि इसमें विभिन्न जीवन शैली, शिक्षा और व्यवसाय शामिल हैं। भारत में कई अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से उपयोगी होंगे, यदि वे निम्नलिखित तीन बातों पर आधारित हों: –

I. पारंपरिक भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति क्या थी, प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक महिलाओं में कितना बदलाव आया है?

II। बदलाव की पृष्ठभूमि जानना भी महत्वपूर्ण है।

III। बदलती परिस्थिति में महिलाओं को अपनी सामाजिक भूमिका के बारे में कैसे पता चलता है, कैसे वे अपनी सामाजिक स्थिति के बारे में सोचती हैं और एक बदली हुई स्थिति में किस भूमिका से जूझ रही हैं।

सामाजिक परिवर्तन के एक कारक के रूप में शिक्षा एक ऐसा कारक है जो किसी व्यक्ति के सभी पहलुओं को बदल देता है, अन्य सभी कारक किसी व्यक्ति को बाहरी रूप से बदल देते हैं लेकिन शिक्षा व्यक्ति को आंतरिक रूप से बदलती है अर्थात आर्थिक, राजनीतिक, विधायी आदि। कारक व्यक्ति अपनी पोशाक, जीवन यापन आदि को बदल सकता है। , लेकिन शिक्षा व्यक्ति को आंतरिक रूप से बदल देती है। इसी प्रकार, महिलाओं की सामाजिक स्थिति को बदलने में शिक्षा मुख्य कारक है। भारतीय गांवों में महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए, उन्हें शिक्षित करना बहुत महत्वपूर्ण है। उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए, उनके काम में गतिशीलता लाना आवश्यक है। शिक्षा एक पिछड़े और विकलांग व्यक्ति के सामने अवसर प्रदान करती है जो उसकी सामाजिक स्थिति को बढ़ाने में मदद करता है।

परिवार और घर के आर्थिक मामलों में महिलाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। यह सच है कि समाज के हर पहलू में महिलाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन परिवार और घर के आर्थिक मामलों में महिलाओं का विशेष स्थान है, क्योंकि बच्चों की भविष्य की मां अपने हाथों से बनाती हैं। लेकिन उन्हें वे अधिकार नहीं मिले, जिनके वे सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में हकदार थे। आज, दुनिया के सुव्यवस्थित और विकासशील देशों को भी एहसास होने लगा है कि अगर किसी भी राष्ट्र को प्रगति और विकास के रास्ते पर आगे बढ़ना है, तो महिलाओं की स्थिति और

भूमिका को बेहतर बनाना होगा और साथ ही इसे स्वीकार करना होगा ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को शिक्षकों और उनके लिए रोजगार उपलब्ध कराना होगा ताकि उनकी स्थिति बदल सके। सामाजिक परिवर्तन के मुख्य कारक के रूप में शिक्षा वह कारक है जो समाज में परिवर्तन और प्रगति की ओर ले जाती है। कोई भी राष्ट्र प्रगति नहीं कर सकता है, कोई भी समूह आगे नहीं बढ़ सकता है, कोई भी व्यक्ति शिक्षा के बिना आगे नहीं बढ़ सकता है।

शिक्षा मुख्य साधन है जिसके माध्यम से महिलाओं में विकासात्मक और सामाजिक गतिशीलता आ रही है। क्योंकि शिक्षा के साथ ही महिलाओं की स्थिति में गतिशीलता संभव है। आज शिक्षित महिलाओं की स्थिति घर, परिवार, पड़ोस, रिश्तेदारी और समाज में भिन्न है। उन्हें सम्मान की नजर से देखा जा रहा है। शिक्षित महिलाओं का भविष्य और उनका अस्तित्व ही प्रगतिवाद का परिणाम है। शिक्षा प्राप्त करने के बाद, महिलाएं घर के कामों को छोड़कर सरकारी, गैर सरकारी विभागों जैसे कार्यालयों, कारखानों, गैर सरकारी संगठनों, शिक्षा में कामकाजी महिलाओं को छोड़ रही हैं। जैसे-जैसे शिक्षा महिलाओं में फैलती है, वैसे-वैसे उनकी पारंपरिक विचारधाराएँ, मान्यताएँ, प्रथाएँ और जीवन शैली भी बनती हैं। इस प्रकार शिक्षा ने महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में पुलिस, सेना, वायु सेना और अन्य प्रशासनिक अधिकारियों के रूप में काम करने के अवसर प्रदान किए हैं।

सारांश : -

उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि परिवर्तन भारतीय ग्रामीण समाज की संरचना और महिलाओं की दुनिया को प्रभावित कर रहा है जिसके कारण उनके पारंपरिक पदों और भूमिकाओं में बदलाव आया है। भारतीय समाज में ग्रामीण महिलाओं की स्थिति बहुत बदल गई है और आज वे खुद से अवगत हैं। शिक्षा और सामाजिक जागरूकता के बढ़ते प्रसार के कारण, आज वे पूरी तरह से पुरुषों पर निर्भर नहीं हैं। उनमें जागरूकता आई है, जिसके साथ उन्होंने अपना स्थान बढ़ाया है। परिणामस्वरूप, आज की महिलाएं, चाहे वे ग्रामीण या शहरी क्षेत्रों की हों, उनकी बौद्धिक और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने की इच्छा बढ़ रही है। आज की ग्रामीण महिलाओं को यह एहसास होने लगा है कि अपने अधिकारों के लिए लड़ने और हासिल करने के लिए, बौद्धिक जागरूकता के साथ-साथ आत्मनिर्भरता भी आवश्यक है, जो शिक्षा से ही संभव है। आज उन्हें लगता है कि अपनी क्षुद्र जरूरतों के लिए दूसरों पर निर्भर रहने के बजाय आत्मनिर्भर होना बेहतर है। इन सभी परिवर्तनों के साथ, महिलाओं के प्रति समाज के अन्य सदस्यों के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन होना चाहिए। आज की शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान के रूप में ज्ञान प्राप्त करना है और अज्ञानता के रूप में अंधेरे को दूर करना है। प्राचीन काल में, महिलाएं शिक्षा से पूरी तरह से वंचित थीं लेकिन जैसे-जैसे शिक्षा का प्रसार जारी रहा, वैसे-वैसे ग्रामीण महिलाओं का भी स्थान बनता गया। गुलाब का फूल। शिक्षा के प्रसार ने महिलाओं के जीवन और विचारों को भी बदल दिया। शिक्षा के माध्यम से एक ही समय में उन्होंने गतिशीलता में वृद्धि की है, परिवार समाज में नई सोच, अधिकारों के बारे में जागरूकता और समायोजित करने की क्षमता। आज, ग्रामीण महिलाएँ भी धार्मिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, जिसके पहले उन्हें दूर रखा गया था। साथ ही आज महिलाएँ शिक्षा, कला, विज्ञान, राजनीति आदि सभी क्षेत्रों में अपना योगदान दे रही हैं। महिलाओं ने

देश की स्वतंत्रता के लिए सभी आंदोलनों में एक प्रमुख भूमिका निभाई, हालांकि वे उस समय संख्या में कम थीं। आज के आधुनिक औद्योगिक समय की माँगों को देखते हुए, महिलाओं को अपने स्वयं के पदों को मजबूत करने के लिए हर संभव प्रयास करते हुए देखना आम बात है, जिसके परिणामस्वरूप आज शिक्षा के प्रसार के साथ ही कई महत्वपूर्ण पदों पर महिलाओं का कब्जा है।

Reference:-

1. डॉ। शिविंदरजीत कौर, (2002) जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज पार्ट– ॥ स्ट्रक्चर ऑफ इंडियन सोसाइटी, सोशल चेंज इन इंडिया, जालंधर न्यू एसीर प्रकाशन कंपनी।
2. Dr. UttaraYadav, (2004) *Rural Women in Transition*. Elahabad. ShaitSangam Publication,
3. Ram Ahuja. (2005) *Social Problems in India*. New Delhi.
4. Anthony Giddens, (2008) *Sociology* USA Polity Press,
5. C.N Shankar Rao, (2010) *Sociology,* New Delhi, S. Chand & Company Ltd.
6. G. VijayeshwariRao, (2004) *Women and Society*.Mumbi, (Himalaya Publishing House.
7. Geraldine Forbes,(2000) *Women in modern India.* Cambridge university press.
8. Rawat, H.K. (2007). *Sociology (Basic Concepts)* Jawahar Nagar, Rawat Publisher.
9. Bhatia & Bhatia. (2007) *The Philosophical & Sociological Foundations of Education*, New Delhi. Doaba House Publishers,
10. www.Sociologyguide.com
11. www.answer.com